कबीर का काव्य और उनकी प्रासंगिकता

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

हिन्दी साहित्य में शुद्ध साहित्य और सरसता की दृष्टि से तुलसी और सूर तथा विषय के महत्व की दृष्टि से तुलसी और कबीर अद्वितीय है। तुलसी में अपने आदर्श के कारण जहां शक्ति, बल और उत्साह मिलता है–वहां कबीर में, जीवन की प्रधान समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित हो, चिन्तन की प्रेरणा मिलती है। इस क्षेत्र में कबीर अद्वितीय हैं। अपनी इस सार्वजनिक भावना के कारण ही वे जनता में विशेष लोकप्रियता प्राप्त कर सके। रसग्राहियों और कला–पिपासुओं ने कबीर का विशेष सम्मान नहीं किया। भ्रातृ भावना और समता की दृष्टि कबीर से पहले इस रूप में और कहीं भी नहीं दिखाई पड़ती। राजानुज भक्ति के क्षेत्र में तो समानता के समर्थक थे परन्तु इस क्षेत्र से बाहर वे भी सामाजिक भेदभाव को मानते थे। लेकिन हम सब ईश्वर की सन्तान हैं, मनुष्य मात्र समान हैं, जाति और धर्म का कोई भेद नहीं है। इस तरह की घोषणा करने वाले सर्वप्रथम व्यक्ति कबीर ही थे। इस तरह कबीर दृढ़ता के साथ उदार मानवता का स्वर बृलन्द करने वाले हिन्दी के प्रथम कवि थे।

कबीर के व्यक्तित्व के दो प्रधान पक्ष हैं–प्रथम, धर्म सुधारक उपदेशक का द्वितीय, शुद्व भक्त का। इसी के अनुसार उनके काव्य के भी दो पक्ष हो गये हैं। धर्म सुधारक उपदेशक के रूप में उन्होंने जो कुछ कहा है, वह खण्डन–मण्डन की उग्र भावना से ओत–प्रोत होने के कारण नीरस, शुष्क एवं कर्कश भाषा में है। उसमें साहित्यिक सौन्दर्य का अभाव है, क्योंकि ऐसा करते समय सरस काव्य का सृजन करना कबीर का लक्ष्य भी नहीं था। कविता को तो उन्होंने अपने विचारों तथा भावों को जनता तक पहुंचाने का माध्यम बनाया था। उन्होंने न 'मसि कागज' छुआ था और न ही हाथ में कलम ही गही थी। वे तो केवल प्रेम का ढ़ाई अक्षर पढ़कर ही पण्डित हो गये थे। कवि के लिए अपेक्षित गुणों प्रतिभा, शिक्षा और अभ्यास में से कबीर में केवल प्रतिभा थी। उनके ज्ञान का साधन औ स्रोत सत्संग और पर्यटन था। वे बहुश्रुत थे इसी से उनके काव्य में विभिन्न प्रदेशों में प्रयुक्त अनेक कवि समयों, प्रतीकों तथा अलंकारों का सौन्दर्य आ गया है। उनके रूपक और उलटबांसियों के विरोधाभास साहित्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं। ये गुण उनके काव्य में अभिव्यक्ति की निश्छलता और गहनता के कारण अनायास ही आ गये थे।

कबीर का व्यक्तित्व क्रान्तिकारी था। उनका यह व्यक्तित्व ही भक्त, प्रेमी तथा शुद्व मानव की विभिन्न धाराओं में बहा है। उनके व्यक्तित्व में सर्वत्र एक प्रखरता, निश्छलता तथा स्पष्टता है। उन्होंने अपने अशिक्षित होने की बात बड़े गर्व के साथ स्पष्ट और निश्छल शब्दों में कह दी थी, परन्तु उन्हें अपने सांसारिक अनुभव और ज्ञान पर पूर्ण आस्था थी। इसी से उन्होंने शिक्षित पण्डितों को ललकार कर कहा था– **तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी।** उनकी आंखिन की देखी बात वहां तक तो ठीक है जहां उन्होंने प्रेम में तन्मय होकर अपनी गहन भक्ति भावना और उसकी अनुभूति का प्रदर्शन

किया है, परन्तु जहां वे खण्डनात्मक प्रणाली का आश्रय ले, दार्शनिक तत्वों का निदर्शन करने का प्रयत्न करते हैं, वहां उनकी यह आंखन की देखी, बात लड़खड़ा उठती है, काव्य शक्ति उनका साथ छोड़ जाती है। इसका कारण यह है कि तर्क के लिए शास्त्रीय बुद्वि एवं ज्ञान की अपेक्षा होती है। दार्शनिक विवेचन में मस्तिष्क और ज्ञान प्रधान होते हैं। कबीर में मस्तिष्क तो था परन्तु उनका शास्त्रीय ज्ञान न के बराबर था। इससे वे इस क्षेत्र में लड़खड़ा उठे हैं। उनका वास्तविक और स्वाभाविक क्षेत्र, काव्य की दृष्टि से, तो हृदय ही था। इसी से उन्हें केवल वहीं थोड़ी बहुत सफलता मिलती है।

कबीर साधक थे। उनकी साधना के दो रूप थे–कर्मयोग और हठयोग। कर्मयोगी के समान वे संसार के माया मोह से निर्लिप्त रहते थे। उनकी कथनी और करनी में साम्य था। परन्तु उन्होंने संसार क संघर्ष से पलायन का उपदेश कभी नहीं दिया, वे उससे टक्कर लेने के पक्षपाती थे। उनकी इसी सक्रिय कर्मण्य साधना को लक्ष्य कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है–साधना के क्षेत्र में वे युग युग गुरू थे, उन्होंने सन्त काव्य का पथ प्रदर्शन कर साहित्यिक क्षेत्र में नव निर्माण का कार्य किया था। उनके समकालीन एवं परवर्ती सभी सन्त कवियों ने उनकी वाणी का अनुकरण किया। हिन्दू मुस्लिम ऐक्य की जो विचारधारा आज इतनी प्रबल हो उठी है, उसके मूल प्रवर्तक कबीर थे। इस धारा को मैथिलीशरण आदि गांधीवादी कवियों ने अपनाया। इस प्रकार **कबीर–न तत्कालीन समाज में साधना के क्षेत्र में ही गुरू थे–वरन् सन्तमत, सूफीकाव्य और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य सम्बन्धी साहित्य के पथ प्रदर्शक और आदि स्रष्टा भी थे।**

कबीर युगद्रष्टा थे। अपने समय की सम्पूर्ण सांसारिक गतिविधियों पर उनकी नजर रहती थी। गांधी आधुनिक युग के द्रष्टा एवं नियामक थे। युगद्रष्टा शाश्वतकाल से विषमताओं का खंडन कर, शुद्व मानवता का प्रचार करते आए हैं। कबीर और गांधी की तुलना और उनकी समान भावना का विश्लेषण यह सिद्व कर देगा कि गांधी के समाल कबीर भी अपने समय की जनता के एकमात्र प्रतिनिधि और पथ प्रदर्शक थे। महात्मा गांधी की मां कबीर पंथी थीं। गांधीजी पर उनकी शिक्षा का बहुत प्रभाव पड़ा था। गांधीजी की सबसे बड़ी विशेषता जो उन्हें कबीर के साथ ले जाकर रखती है, वह उनकी आध्यात्मिक प्रेरणा है। वे हमेशा उस परम तत्व तक पहुंचने का प्रयत्न करते हैं, जिसे उन्होंने, कबीर के शब्दों में, अनिर्वचनीय ज्योति अथवा परम प्रकाशन कहा है। उस दुर्बल से शरीर को लोक कल्याण में प्रवृत्त होने की अनन्त शक्ति उसी ज्योति के दर्शन से प्राप्त हुई।

वास्तव में कबीर ने एक आदर्श समाज का सपना देखा था, जो वर्णभेद जैसी मानव–मानव को अलग करने वाली परम्पराओं से मुक्ति था। लेकिन ऐसा समाज आज भी हमारे लिए एक यूटोपिया ही है। आज भी हमारे समाज में विभिन्न तरह के विभेद सक्रिय हैं। आज भी हम अंधविश्वासों से जकड़े हुए हैं। इसीलिए कबीर आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने 600 साल पहले थे। कबीर आज अपने विचारों के लिए पुनः प्रासंगिक हैं कि सत्ता उनके आदर्शों के प्रसार के लिए मगहर को एक विशिष्ट ज्ञान केंद्र बनाने जा रही है, यह कवि के आदर्शों पर चलने की पहल है। यदि सचमुच कोई शासन कवियों से प्रेम करता है तो वह पूरी मानवता से प्रेम करता है। कबीर को अपनी कार्यसूची में प्राथमिकता देकर सरकार ने एक आलोचक कवि से अपना जुड़ाव दर्शाया है। पर कवियों ने सदैव लोकहित की बात की है। देसे लोकहितसाधक कवि जो वास्तव में समाज का गहरा आलोचक रहा है, के नाम पर मगहर को एक बड़े केंद्र के रूप में स्थापित करने का यह प्रयास निंदक नियरे राखिये आंगन कुटी छवाय का ही परिचायक हैं।

सन्दर्भ

- साहित्यिक निबन्ध–डॉ0 राजनरायण शर्मा पृ. 38
- गांधी और कबीर–डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थवाल पृ. 42
- कबीर और मगहर पर विशेष–उ0प्र0पत्रिका पृ. 33
- हिंदी साहित्य का वस्तुपरख इतिहास–राम प्रसाद मिश्र, पृ. 51
- हिंदी साहित्य का इतिहास–रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 112
- कबीर का दर्शन–डॉ. आर.पी. वर्मा, पृ. 81
- कबीर और उनका मानवतावादी दृष्टिकोण–रामदरश मिश्र, पृ. 119
- कबीर का क्रांतिकारी व्यक्तित्व–राम प्रसाद मिश्र, पृ. 29

Copyright © 2013, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.